अपनाएं

देसी मुर्गी पालन

परिचय :

आदिवासी ग्रामीण इलाकों में देसी मुर्गी पालन आजीविका का महत्वपूर्ण एवं पारंपरिक श्रोत है। मुर्गी पालन घर की तत्काल नगदी आवश्यकताओं को पूरा करती है, और साथ–साथ पोषण का भी ख्याल रखती है। इसके अलावा मुर्गी पालन से अन्य जरूरतें : जैसे अतिथि सत्कार्य, पूजा कार्य, मनोरंजन आदि का भी इस्तेमाल किया जाता है।

हाल के वर्षों में ब्रायलर मुर्गी के बढ़ोतरी एवं चलन से कुछ लोगों का यह मानना था की देसी मुर्गी पालन खत्म हो जायेगा। लेकिन आज भी देश में 84% पक्षियाँ देसी नस्ल की पाई जाती है। 2012 में हुई पशुधन जनगणना के अनुसार, झारखंड के पलामू और लातेहार जिले में कुल पक्षी आबादी में देसी पक्षी की आबादी का हिस्सा 67% और 82% क्रमशः था। यह आकड़ा स्पष्ट रूप से देसी पक्षियों को दी जाने वाली लोकप्रियता और पसंद को दर्शाती है।

देसी मुर्गी पालन करने के फायदे :

- **कम निवेश** – देसी पक्षी पालन कम खर्चीला है क्योंकि यह बाजार आधारित चारे पर निर्भर नहीं है।
- **रोग प्रतिरोधी** – ब्रायलर मुर्गी किस्म की तुलना में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है।
- **शिकार से मृत्यु की कम संभावना** – इसकी रासायनिक शक्ति और स्वतः देखभाल प्रणाली के कारण, अन्य जीव–जंतु या जानवर से शिकार से मृत्यु की संभावना कम है।
- **उच्च बाजार मूल्य** – ऊँचे मूल्य में इसकी बिक्री होती है।
- **अनुकूलनशीलता** – यह मौसम के उतार–चढ़ाव और अन्य प्रतिकूलताओं के अनुकूल हो सकता है।
- **स्वतः सृजन** – देसी पक्षियों में अंडा देने एवं सेवने और चूजों उत्पन्न की प्राकृतिक क्षमता है, जो कि ब्रायलर पक्षियों में नहीं है।
- **स्वतः देखभाल** – देसी पक्षियों पर कम ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि वे हमारे अपने भोजन के स्रोत को खोज लेती हैं।
- **रासायनिक मुक्त पौष्टिक भोजन** – देसी पक्षियों का स्वाद अच्छा होता है और यह स्वास्थ्य के लिए भी पौष्टिक होते हैं।

देसी मुर्गी पालन कार्यक्रम :

मुर्गी ब्रीड सेंटर – एक मुर्गी ब्रीड सेंटर में 25 से 50 मुर्गिया (10 मुर्गी और 2 मुर्गा का अनुपात में) रखीं

जा सकती है। अपने घर के आस–पास के छोटे से टुकड़े (0.25 से 0.50 एकड़ 10000 से 21000 sq. फीट) में घेरा कर मुर्गियों को खुला चरने एवं दिन में रहने का स्थान बनाया जा सकता है। इस घेरे को रासायनिक, बॉस या पुटुस की घोरानी या फिर लोहे के तार के जाली से 5 से 6 फीट ऊँची तक की दीवार से घेरा जा सकता है। इस चाहरदीवारी जमीन के अन्दर मुर्गियों के लिये प्राकृतिक भोजन का व्यवस्था करना लाभदायक है। मुर्गियों का प्राकृतिक भोजन अधिकतम छोटे कीड़े या कीट जैसे चींटी, दीमक, केंचुआ इत्यादि होते हैं। इसे विकसित करने की व्ययस्था घेरा के अन्दर किया जा सकता है – जैसे की जगह–जगह पर गोबर का ढेर को सड़ने के लिये रखा जा सकता है, पत्तों को सड़ने के लिय रखा जा सकता है, सब्जी या मकई के कुछ पौधे को उगाया जा सकता है। इसके अलावा मुर्गियों के लिये अलग से आहार की व्यवस्था की जा सकती है।

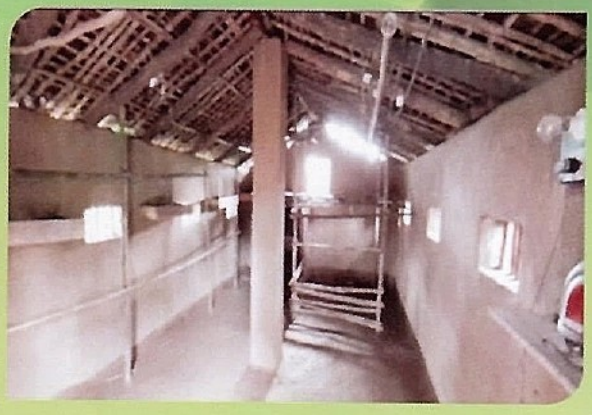

इस घेरा में मुर्गियों के लिय रात्रि विश्राम घर का निर्माण किया जा सकता है। यह घर एक या दो कमरा का हो सकता है। इस घर में मुर्गियों को उम्र और आकार के अनुसार रहने की अलग व्यवस्था की जाती है, जैसे अंडा देने वाली मुर्गिया, छोटे चूजे और माँ, टेली, व्यस्क इत्यादि। यह बात ध्यान में रखना है की घर में मुर्गियों के लिये रहने की जगह पर्याप्त होनी चाहिए और कमरा हवादार होना चाहिए, जिससे मुर्गियों को ताजा हवा मिल सके। ब्रीड सेंटर निर्माण में इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक है की रात्रि विश्राम घर जंगली जीव जंतु एवं जानवर के हमले से सुरक्षित रहें।

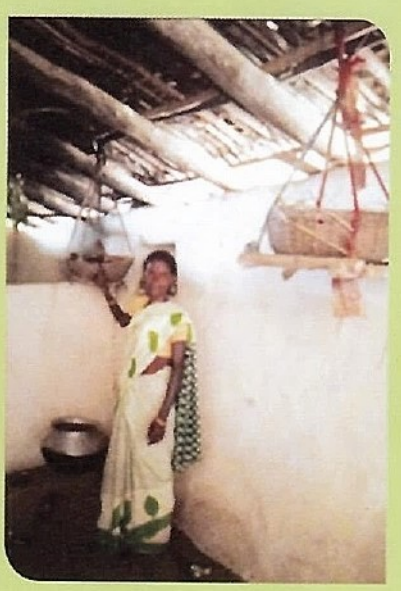

घरेलु मुर्गी पालन के मॉडल रखरखाव तरीका – उन्नत तरीके से घरेलु मुर्गी पालन के लिय तीन महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकता है, जैसे की :

1. रात्रि विश्राम कक्ष – स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से मुर्गियों के लिय रात्रि विश्राम कक्ष का निर्माण किया जा सकता है। इसका उद्देश्य मुर्गियों को सुरक्षा, प्रजनन स्थान, स्वच्छ स्थान प्रदान करना है। मुर्गियों की उम्र, हालत, प्रवृत्तियों और स्वस्थ के अनुसार कक्ष का विभाजन किया जा सकता है। इस व्यवस्था के लिय अलग से मकान या कमरा करने की आवश्यकता नही है, बल्कि इसे मौजूदा स्थान में समायोजित किया जा सकता है। बांस की टोकरी, मटके या अन्य बर्तन धारक के उपयोग से कमरे के कोने में तल्ले–वार इमारती मंजिला का निर्माण किया जा सकता है। इस तरीका से मुर्गी संक्रमण रोग से दूर रहता है और आस–पास वाले जगह को साफ–सुथरा आसानी से रखा जा सकता है।

2. पौष्टिक चारा – घरेलू स्तर के हस्तक्षेप में अहम् है मुर्गियों के लिय पूरक आहार की व्यवस्था। चारे का उत्पादन स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री जैसे मक्का, अनाज की खल्ली, दर्रा, टूटे हुए चावल के टुकड़े, सरसों के अवशेष आदि के साथ किया जा सकता है। घरेलू स्तर पर उत्पादित अंजोला घास भी पौष्टिक चारे की वस्तु का हिस्सा हो सकता है. गाय का गोबर, पत्ती और पौधे की सड़न आदि के माध्यम से प्राकृतिक कीट आधारित चारे का उत्पादन किया जा सकता है।

3. संस्थागत टीकाकरण एवं देख–भाल – मुर्गियों को नियमित रूप से टीकाकरण एवं स्वस्थ देख–भाल के लिये संस्थागत टीकाकरण की आवश्यकता है। स्थानिय किसान संगठन या संस्था जैसे स्वयं सहायता समूह या किसान क्लब या उत्पादन समूह से इस व्यस्था को जोड़ा जा सकता है। स्थानीय समुदाय से प्रशिक्षित पारा–वेट या प्राणी मित्रा द्वारा सर्विस चार्ज आधारित मॉडल को अपनाया जा सकता है।

स्वस्थ मुर्गी और रोगी मुर्गी पहचानने का तरीका

क्रम	लक्षण	स्वस्थ मुर्गी	रोगी / बीमार मुर्गी
1	आसन – मुर्गी का बैठने का तरीका	◆ सीधे खड़ा रहता है और सिर और पूंछ ऊँची रहती है।	◆ सिर शरीर के करीब रहता है। ◆ पूंछ और पंखों को गिरा रहता है। ◆ गर्दन मुडी रहती है। ◆ सिर पीछे रहता है या दो पैरों के बीच में रहता है।
2	सर / मुंडी	◆ कंघी जैसे किया गया चमकीला चुंदी ◆ आंखें चमकीली और सतर्क ◆ साफ नथुने या नाक	◆ सिकुड़ा हुआ, हल्का नीला बाल और चुंदी ◆ सुस्त और आंखें पानी से भरी हुई ◆ पानी से भरा हुआ नाक
3	मॉस – मुर्गी का शरीर	◆ मुर्गी उठाते समय वजनदार लगता है और छुड़ाने के लिये ताकत और इच्छा प्रकट करता है।	◆ मुर्गी उठाते समय वजन कम और ताकत कम लगता है।
4	टांगें और पैर	◆ पैरों को ढकने वाला चमड़ा साफ और मोम की तरह लगता है। ◆ छूने से ठंडक महसूस होती है।	◆ पैरो को ढकने वाला चमड़ा फुला, उखड़ा–उखड़ा और रुखा रहता है। ◆ पैरों के नीचे दरारें रहती है। ◆ छूने से गर्म महसूस होती है।
5	पंख	◆ चिकना, साफ और स्वच्छ	◆ फूला हुआ, और टूटा हुआ ◆ पेट के क्षेत्र में धब्बा ◆ रुखड़ापन
	भूख और प्यास	◆ बार–बार खाना और पीना	◆ भूख में कमी और बार–बार प्यास लगना।
7	सांस लेना	◆ नाक से सांस लेगा और आवाज नहीं आएगा (अगर तापमान 30^{0}C है तो वयस्क मुर्गी और 38^{0}C है तो चूजा मुर्गी मुंह से सांस लेगा)	◆ गड़गड़ाना और तेज आवाज ◆ हांफना
8	मुर्गी लेढ़ी (मल)	◆ धुमैला–भूरा और सफेद कैप रंग का मल ◆ चिपचिपा एवं ठोस मल ◆ मल झागदार हो सकती हैं।	◆ दूधिया सफेद, हरा, पीला और लाल मल ◆ मल अत्यधिक तरल और चिपचिपा ठोस नहीं होता है।

देसी मुर्गी की मुख्य बीमारियाँ

क्रम	बीमारी का नाम	विवरण	प्रस्तावित उपाय
1	RD / रानीखेत / ND / न्यू कैसल / टुनकी	◆ यह एक तीव्र वायरल रोग है जिसमें सांस प्रणाली प्रभावित रहती है, अंडे के उत्पादन में गिरावट आती है और गंभीर मामलों में 100% तक मृत्यु दर होती है।	◆ टीकाकरण : उम्र – वैक्सीन का नाम 5 – F/B 27 – लासोटा 52 – लासोटा 64 – R2B 112 – लासोटा 280 – लासोटा
2	फाउल पॉक्स	◆ फाउल पॉक्स एक धीमी गति से फैलने वाली, व्यापक रूप से प्रचलित, संक्रामक वायरल बीमारी है। यह बीमारी चमड़ा, सांस और पाचन प्रणाली को प्रभावित करता है।	◆ टीकाकरण
3	आंतरिक परजीवी	◆ आंत और कंठ के हिस्से में छोटे कीड़े होते है, जो बहुत घातक होते है।	◆ कीड़ा मारने के लिये पानी और चारा में दवा का प्रयोग।
4	बाहरी परजीवी	◆ मुख्य बाहरी परजीवी लाल माइट और जू होते हैं। यह परजीवी रात में मुर्गियों के रक्त चूसते हैं और उनकें मौत का कारण बनते है।	◆ साफ–सफाई एवं सतर्कता पर ध्यान ही एकमात्र उपाय है।
5	मारेक रोग	◆ यह अत्यधिक संक्रामक वायरल बीमारी है जिसकी विशेषता नसों और आंतरिक अंगों के इजाफा होना है।	◆ टीकाकरण : उम्र – वैक्सीन का नाम 0 – MD (Bivalent) 7-10 – MD (Bivalent)

Note – यदि व्यापक बीमारी का प्रकोप है, तो सबसे अच्छा उपाय रोगग्रस्त मुर्गियों को जल्द से जल्द हटाने का है। इन रोगी मुर्गियों को जमीन में दफन देने से अच्छा है।

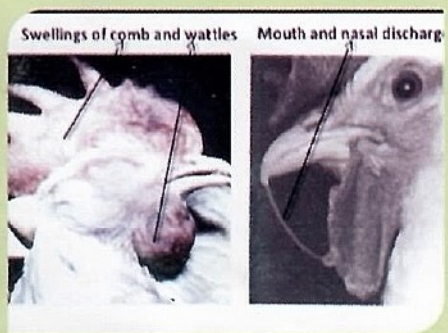

Printed by : Suprabhat Udyam, Daltonganj | Mob. : 9431135032, 9534008999